



१०६ मदानवपी पुनर्विद्ये

मुक्ता न दत्तं विना गच्छती ॥ न दत्तं दूषयन्त्या न दत्तं नयसिद्धिदा ॥

कलङ्ग

महाकौलवलिङ्गवत्

द्वारवलिखट्टवत्

आकाशमालाद्याय

ASHA ARCHIVES

3073	
------	--

नमः॥ॐ विष्णवे नमः॥ॐ स
दागिवाय नमः॥ॐ हृदयाय

ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥

यव न नाशुन प्रथी न म॥ ॐ
 वनू मूर्त्ति यधू पा न म॥ ॐ आ
 त्म न व न म॥ आ त्म न प्रथी न
 म॥ ॐ आ त्म न सि व र्त्ति न म॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमः श्री महादेव वाय ॥
जय त्रिमालिनी देवी निर्मल
लमलनागनी स्नानन किर्य
रुदवी वृद्धिस्तु न ऊवदनी
॥ १ ॥ जननी सर्वरुगानी

ससाधस्मिन् यवस्मिन् ता १ ता रा
 वीरासुनीदनी कावृन्धुक्रु
 वत्स ॥ १ ॥ जयनियत्रमे
 गत्वनिर्वाणसंरुत न आमया
 नि ४ सुतावक्रुया यराह्मा
 नभाकिस्त्वमिच्छाक्रियामग
 लाष्टरुप्रखासुप्रखा १ पूनमस
 फनाएद्रवकुउलाकाल
 रूपा १ पदूर्नोर्देकिमुसं
 गीयसंतासूराक्रातिरूपा
 स्वरूपाणिवा अंष्टाचनामाच
 वामाचनोडीमनाक्रान्तिका
 विद्रुपावधूगाह्वचन्द्रा
 कृतास्त्वष्टिकाग्न १ गूकात्र
 उकात्रसकात्रचसंथाअं

मक उच गत्व मापयम ५०
 तत्त्व त्रयात् गमकां वंयिनी नष्टा
 नादा नथा निस्तपावृथी क
 भृशं भाहिनी त्रुमादेनातथा न
 नग कि. त्रुस्तस्मा विमूर्तिव
 नीम धिनी रात्र हनी सिध्याः
 गमत्त कस्तानूह गा रु राख्या
 उर्मंटी समश्वात्मिकामुग्रहना
 विरुद्रुत्रय हान कास्तम ह
 मनसं हागिनी ५० गमका मृ
 ना विनू संधाहमी स्य च द हं प्र
 ता (ग) य स र्वा द्वा नानन्द निवो सो
 खयुध र्हे वी हं वी या उ की
 जन ७ कं १ य गामा लिनी ५३

माला विनू त्रुडम कि ४ ख गी सि
 दिथा गी त्रु वी सि दि मा ता विडु
 ४ म द्वा गी ति भा ना लु वी वा
 विष्टा द्वा सि वा गी ध्व वी ५ मा
 लि का र्या त्वा मि द्वा क्रिया म द्वा
 ल सि द्वा ल द्वा वि ह ति ४ ग ति
 गमत्त निश्चा नि ना रा यणी ५३
 क वलु क ना ल क ल्म ही म त्रु या
 महा कू य या ग वि या । त्वं ज या
 त्वं ज य न्ता जि ता त्रु द्वा सी मा ह नी
 त्वं न वा त्मा न न्द द व स वा त्मी ग
 या ना ह ता म रु मा र्म नू ने र्था
 त्ति र्वा न या ना नू ल का त्म क
 नु र्वा य स द वि र्वा व मूर्त दि द्वा
 या ना त्म वे र्म लु क काल का या

ऐवधनेनागयालेउकावड
पादानलेहयिनेनामसका
हेनादविमूयानिधारेमहा
वाधिलि४समूययादारविः
दुदयनमहाकासाभित्तज
यह१लक्य१मधिन्युवकसु
वडाकपूयायुधेभीलिमा
लासिसरायकिजल्लयिज
ने४सर्ववासासिकहेववा
हेववक्तमरव्यागमाहेक
महायनाधकमहायनाध
मिवउवकुलामहादवीहे
वमनमस्तना॥नगालिहः
विनिलिधनिर्नतायमम
नी॥ॐमिमासिनीदलुकस
माक४॥ ॥ ॥

नगोद्वानावर्न॥ ॥
ॐगलाजामिवद्वानवन्ध
मानसदामसुयजमानाह
विलि४॥अकउमानावपू
हवीधुनूसलेसमानआयु४
प्रमायी४॥ॐदवह्यलास
विदु४प्रमायमिनावाक्या
पूक्षाहलाह्या॥ॐलुमने
यलिसमायुधुनिल्लमम
मनसानत्यनि॥लवयल्ल
मायधील्लनृमनृयनजा
यमनुवि४॥ॐआयाअसा
माक४॥ॐधवल्लयुमननी
यनय४पूनतु॥विन्य०हिनिस
यवरुकिदवीवृदिनाय४॥वि
नापूतयमि॥ॐयस्यकूर्मागुरु

हविस्तमः प्रवर्द्धयात्मी। तस्मैदं वाभू
 द्विव्रवन्नयं प्रवर्द्धयात्मी। तस्मैदं वाभू
 दस्तन्ययधर्मजायमानउग्रुत्त
 मूदादूतवायूनीषा।। ननस्ययका
 हविस्तमः प्रवर्द्धयात्मी। तस्मैदं वाभू
 तन्मः प्रवर्द्धयात्मी। तस्मैदं वाभू
 ॥ यद्वाक्षि यद्वाक्षि रवा॥ तन्मः प्रवर्द्धयात्मी
 सि यद्वाक्षि तन्मः प्रवर्द्धयात्मी। तस्मैदं वाभू
 ॥ यद्वाक्षि तन्मः प्रवर्द्धयात्मी। तस्मैदं वाभू
 नानि वल्लानि। यद्वाक्षि तन्मः प्रवर्द्धयात्मी
 यथा ॥ यद्वाक्षि तन्मः प्रवर्द्धयात्मी। तस्मैदं वाभू
 शात्रनवः प्रवर्द्धयात्मी। तस्मैदं वाभू
 हिनाभूयययिहिः प्रवर्द्धयात्मी। तस्मैदं वाभू
 दात्रनाभूयययिहिः प्रवर्द्धयात्मी। तस्मैदं वाभू
 ॐ नमः प्रवर्द्धयात्मी। तस्मैदं वाभू
 विरिह्याहिमयूत्रशामहिः प्रवर्द्धयात्मी। तस्मैदं वाभू

माहाकविन्नियमनिनृषादि
जिभातिधन्ववनाइं हि ॥
कुंदात्रादवीवन्वस्यविश्वेष
माददन्तुः (न०) उद्यवशा
धाम्नाः ॥ यत्प्रमाणाः ॥ कुंदात्रा
त्रिगुणगुणायुस्ययादाद्वशी
धर्मसकलस्मासाजुस्यरिषिधव
द्वाद्वषसात्रावतीतिमहादवा
मस्याइंजुहवन् ॥ कुंदात्रा
मनउतमूजनधियवियाविप
स्यवृहमावियमिन् ॥ विहा
गादध्वयूनाविध्वक ॥ नम
हिदस्यसविदुः ॥ यमुनिः ॥ स्या
दा ॥ कुंदात्राविष्णुविवक्रम
कुंदात्राविध्वयदरसमूरुम
स्ययालं ॥ सुत्रा ॥ कुंदात्रा
पूनादिर्गयकस्यदवस्यविउं

हाता वंरत्नधन ॥ ॐ ॐ धला
 ऊं ला वा य व ल द वा व ॥ से विः
 ना पा र्थ य उ ॥ ॐ ह न मा य क र्म
 न ॥ आ या य ध म ग्ना ॐ द्या य
 हा गं प जा व नी व नी ना अ य उ
 आ मा व ल न ॐ ग न मा य स ॐ
 हा ध र्वा अ स्मि ल्म य मो स्था न
 य द्वा र्थ ज मा न स्य य ॥ न वा दि
 ॥ ॐ अ न आ या दि वी न य गृ
 हा ना ह य जा न य र नि हा ना न
 स्य व दि मि ॥ ॐ ग न्ना द वी व रि
 ह य आ या र व लु यी न य र नं या
 व रि ॥ य व लु न ॥ ॐ उ य द्वा र्थ
 मि त्रा नो ॐ स ग म य न दाना धि
 या वि था अ जा य न ॥ ॐ न दी ल ॥
 धा ॐ ॐ नृ धि का खाने वा द य
 वृ षं था धा य द र्म द ग न्ध र्वा ॥ ॐ

ना था पा र्थ य गृ ॥ ॐ न्म रु ॐ स
 प्य द व ज न र्थ ॥ ॐ प ति प द म य र्थ
 ॥ कि न व मी ज ना या अ कि न व पि
 ॥ च र्था वि द का नी न जा रु ध
 न र्थ ॥ क ॐ की का नी न ॥ ॐ ग द
 नां ला ग द प ति ॥ रु वा म द्वा पि या
 नां ला पि य प ति ॥ रु वा म द्वा नि धी
 नां ला नि धि प ति ॥ रु वा म द्वा व सा
 म म आ रु म जा नि ग र्ध ध मा ल्म म जा
 सि ग र्ध ध म ॥ ॐ वृ रु स्य न अ रि अ न
 र्थ अ र्धो धू म धू ला ति क रु म र्ज न वृ
 ॥ य दी रु य द्वा स म्म क य जा न न द
 स्मां गु ड वि न ॥ ध दि वि ॥ ॐ पा व का
 न ॥ स र्वा र्थी वा ज रि र्वा ज नी व ति ॥
 य र्ध व लु धि या व स ॥ ॐ ग्री ध न ल
 द्वा धि प ल्मा व हा ना र्ध पा न ॥ ध न द
 पा नि र्ध प मे धि नो वा र्ध ॥ ॐ ॐ नि स्वा
 नां म म ॐ वा न स र्वा ला र्ध म पि पा न
 ॥ ॐ अ स्मा क मि ल ॥ स मि त वृ ध ज

सुस्माकीजा ॐ घ र का ज य लु अस्मा
 कीवीनाउरुने रव लेस्मा ॐ उदवा
 अवगाहव ॐ ॥ ॐ नमो वरुणाय
 धिनीनानीपतय नमानमा रवस्य
 हल्येजगतानीपतय नमानमा नू
 जायामतायिन कृणानीपतय न
 मानमः सुतायाह रवेनानीपत
 यनमानमः ॥ ॐ सफ य ॐ निरय
 मचक्रमका अस्मा रवति ॥ सफध
 माह धमनिचक्रमजलयक्रमानि
 विष्टुव नानितष्ट ॥ ॐ अमो ज
 क्रामा अनू उत वयुसमदल ॥
 यचेन नूदा अलिगादि कृषिताः
 मरुअमावेवा ॐ हउ ॐ म ह ॥
 ॐ तिसुर्मगलदा ना चैन विष्णो

विष्णो वद ॥ ॐ नमः नरवायव ॥
 ॐ वक्रयहाने ॥ ॐ निवा नामासि ॥
 ॐ यजवाना ॥ ॐ ॐ द विष्णु ॥ ॐ यस्य

कर्मा ॥ ॐ जातानमिदु ॥ ॐ जात
 वदम ॥ ॐ श्रीधर ॥ ॐ असीखाना ॥
 ॐ अक्षवाचदधि ॥ ॐ जात वदम ॥
 ॐ अम्र अम्रिक ॥ रगवतिया ॥
 ॐ हिनय वरु ॥ महालक्ष्मीया ॥
 ॐ अजिघ्रकलस ॥ कलगया ॥
 ॐ नमो वरुणाय ॥ ॐ असीखाना ॥
 वलि ॥ ॐ यदस्कन्द ॥ मालकारु ॥
 ॐ ममानी तागणपति ॥ ॐ उजा ॥
 ॐ आय ॥ ॐ ॐ प्रम ॥ ॐ अक्रम
 म ॥ ॐ दधिकाप्रा ॥ सउनीया ॥
 ॐ यजवाना ॥ कोमानीयावद ॥
 ॐ अह ॥ ॥ ॥
 ॐ ॐ द विष्णु ॥ ॥ ॥
 ॐ नमः नरवायव ॥ ॥ ॥
 ॐ गमनीया ॥ ॥ ॥
 ॐ अक्षवाचदधि ॥ ॥ ॥
 ॐ गुवानधामा ॐ यवृषराः
 नथीस्वा रथयिः सहवाउ न

ॐ भूवका न्मरुः प्रयये नमिर्गि द
नकि लई न लपर्व य न्मरुः ॥ ॥

सूर्यादि ईश्वरि ईश्वरा ॥ ॥

ॐ यावकातशादुः ॥ ॥

ॐ आ कृष्ण ॥ नवग्रहा ॥ ॥

ॐ नमो भगवते ॥

ॐ वाक्त्रयम् ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ गन्तव्यं नो ह्यस्ति ॥ ॐ नमो भूतेश्वराय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

उत्तराखण्ड नासा वन उत्तराखण्ड नासा वन
उत्तराखण्ड नासा वन उत्तराखण्ड नासा वन

वृष ० मृगशिरादि ॥ ॐ नमः

निर्वाणानिय कतित्रित्यस्य दृती

यासांमह्यचतुर्थीदित्येवंचनितं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

नमस्तस्मै श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

सुखी का दली व नूनी स्यादी दली
ममका र सा दली ॥ ॐ ॐ स्वां न

वम/स्य जा न जाति ३

४ य द ति ४ स त स तौ नि य द ति ४ मि य
स्य नृ ती जा यी च नु र्धा नि र्मु र्धे यं व
मो नी धा म यो ४ य छी स यो गी ८
स क मी वि ध्वा न र स्य र्थ म ८ ८ ८
न व मी त्व दृ द ग सी नु र्थे का द
गी व नू ल स्य द्वा द गी य म स्य ग
या द गी या वा यृ थि यो द दि र्ण
वि ८ ८ ८ ८ द वा ना म र्क र्ण ॥ ८ ८
न र्क र्ण ४ स्वा हा न र्क र्ण ४ स्वा
हा ४ स्वा हा र्क र्ण ४ स्वा हा ४ स्वा
हा ४ स्वा हा मा र्क र्ण ४ स्वा हा
पृ त व र्ण ४ स्वा हा मृ न व र्ण ४ स्वा
हा र्क र्ण ४ स्वा हा या वा यृ
थि र्ण ४ स्वा हा व न्द य र्ण
हा र्क र्ण ४ स्वा हा न र्मि र्ण ४
स्वा हा व र्ण ४ स्वा हा नू र्ण ४
स्वा हा दि र्ण ४ स्वा हा म नू र्ण
४ स्वा हा वि ८ ८ ८ ८ द व र्ण ४ स्वा
हा म र्ण ४ स्वा हा न र्ण ४ स्वा

हावनस्यतिहः स्वाहा पूष्यत्य
॥ स्वाहा रुतस्य ॥ ओषधीत्यः स्वा
हा ॥ ॐ ध्यागः यागः गतवस्तुनं वा
जं वाजं रुतमहं सखायं ॐ नु
मूर्तं यः ॥ ॐ अथमुपवागममृग
स्तुपाजायत्याः ॥ रुद्रयीवाभस्त
माननाहं पुनस्तान्सात्रस्तमी
मयवस्तुभन्याः गालिनावः धना
मावाहासोमापोषूः ॥ स्वामानाया
ॐ शौर्यं यामोः ॥ ॐ रुद्रयुपा
यथात्वाष्ट्रीसांमसं गच्छी गः
ॐ स्वायवाः ॥ स्विनपुत्र ॐ न्या
यस्तपस्यायवृहद्वस्तुवात्राम
नः ॥ सर्वकृतासि यत्रिवक्तृना
सिद्धावक्तृनासि वक्तृनासि ॥
उखस्तु कल्याणं मद्यं वावा
स्तु कल्याणं मद्यं मासास्तु कल्या
णं मृगवस्तु कल्याणं ॐ सर्वस्तु
नस्तु कल्याणं नित्यं यथायथं सर्वं

वयजसा वयसु यः ॥ सिवसि
नयांदवेनयां गिरिस्तुधुवा
सीद ॥ ॐ नैवेद्याजाय हुनवे
दनायादिनवदधं नारायक
स्थिगं द्वायगायाधिकस्थिगं
मास्तु न्यायस्तु स्तुतं मृगव
॥ गवस्तु मक्तकाया ॥ गवस्तु
॥ ॐ ध्यागमविद्वत्तु रिक्त
मानउवगिरिस्तु ॥ ॐ न्याय
यलकार्यं वाया नः ॥ ॐ न्याय
ॐ गिमासादियक्षादि ॥ ॥

रुद्रकतया वद ॥
ॐ समितं ॐ सर्वकल्याणं ॐ सुखि
यौ गोविन्दस्तु मस्तु गान्ती ॥ ॐ न्याय
स्तु मस्तु सर्वस्तु न्याय ॥ ॐ न्याय
ना ॐ सिर्वस्तु न्याय ॥ ॐ न्याय
न्याय ॐ न्याय ॥ ॐ न्याय
रुद्रकतया वद ॥ ॥ ॥

सिन्धुवमूदयावद ॥ ॥

ॐ श्रीश्वेतलक्ष्मी ॥ ॥

ॐ श्रीदिईखापिंखा ॥ ॥

गणपति
ॐ गणनांत्वा ॥

ॐ श्रीकृष्ण ॥

ॐ श्रीदेविशु ॥

ॐ नमः श्रीरुद्राय ॥

ॐ गणनांत्वा ॥

ॐ नमः वज्राय ॥

ॐ जानवदसे ॥

ॐ वृहस्पते ॥

ॐ शुभ्रते ॥

ॐ नमः सुसर्थाय ॥

ॐ श्रीशिव ॥

ॐ विष्णवे नमः ॥

ॐ स्वस्ति नमः ॥

ॐ धृतराष्ट्र ॥ धृय ॥

ॐ नमः श्री ॥ दीय ॥

ॐ याः रुद्राणि ॥ रुद्र ॥

ॐ श्रीनयन ॥ श्रीन ॥

ॐ नमः श्रीशिव ॥ श्रीशिव ॥

ॐ नमः श्री ॥ श्रीतिळा ॥

ॐ श्रीदेवाय नमः ॥ ॥

पूजः श्रीशिव ॥ ॐ श्रीशिव ॥

श्रीशिवदादीनां मायुनायाः (शेष)

श्रीजनधनलक्ष्मीसक्तिसक्ता

नवद्विमुखिकामनार्थमहा

नवमीपार्वत्युद्गर्गनाथनउ

पञ्चभुवश्चार्जननिमित्तार्थः

श्रीमार्कण्डेयनवायार्थनमः

ॐ श्रीशिवसर्वकार्यानीकनूमा

रुद्रुदेवदेवकाशगकिशय

क्रीनोमिहास्तत्रार्थनमः

तता आ वा हनी ॥ धून क प चा य ॥

मालिनी प १० ॥ गुं न म य त्रि का
ये ॥ श्री रे न वा वा च ॥ ज य त्व मा
लिनी द वी त्या दि प १० ॥

थन वं ला स ला च कं स्ति न हा ल ॥
कृ पां उ ग य पु या मूल म कु
ख धि या व धा ल १० ज प ल प
॥ उं डी कुं र ग व ले स्वा हा ॥
स्ति न हा ल वा क ॥ डी या व र्व ड
क म नू ता म ही या त्रि ऊ ला व
ह १॥ ता व स्ती सु चि ने का ने च ल
का य स्ति ना र व ॥ स्ति ना र व
म हा द वी द व जा म न जा दि क
द ॥ न त्वं प न मा द वी द र्ने रू प
र यं क री ॥ ज ग न्मा ता त्रि षा ग
य अ व ल त्व स्ति ना र व ॥ सर्व ल
दी प पृ ष्ठ र्थं सर्व ग क द यार्थ
की ॥ अ ह मा दि द ह मा की द र्ने

द वी स्ति ना र व ॥ अ ह मा दी ना मा
यू ना मा ॥ अ ह मा दी ना मा
स कृ ति स न्ना न वृ द्वि मू कि का
म ना र्थ म्म हा ह मी पा र्व ष्ठ र्ण
ना ध न उ ग य पु या द वी च ल का
य स्ति ना र व ३ ॥ ॐ ति स्ति न ॥

थन मा रु नि रु य ॥ क वा रु लः
स्वान ग या व स लि मि ला न द
वी धि य का व त य ॥ मूल म कु
न धा ल १० ज प ल पा व म त या
द व न त य ॥ पू न न्मा र्थ का न य ॥

ॐ नृ ल ह न अ म्मा य रु ॥ ३ ॥
क न ॥ अ ध न ॥ उं डी ना ज प द
अं गु ष्ठा र्थ न म ॥ उं कुं उ ग
च ॥ उ ग र्थ नी र्थ न म ॥ उं न
ग म र्दि नि म ध मा र्थ न म ॥
हूं हूं स दा न क २ अ ना मि का
र्थ न म ॥ त्वां मां हूं स ३ क नि

शार्यानिमः॥ॐ नमो हनकन
गलपु शार्यानिमः॥ धनैरुद
आदि॥ ॐ तिन्यासः॥ ॥

नमो आसनपूजास्नाननमः॥

ॐ श्री आक्षराक्षरकथनमः॥

ॐ श्री अन्ननामनाथनमः॥

ॐ श्री कन्दायनमः॥

ॐ श्री गोकुलायनमः॥

ॐ श्री नालायनमः॥

ॐ श्री पद्मायनमः॥

ॐ श्री पशायनमः॥

ॐ श्री कर्णवायनमः॥

ॐ श्री कर्णिकायनमः॥

ॐ श्री पद्मासनायनमः॥

ॐ श्री सिंहासनायनमः॥

ॐ श्री मरिचासनायनमः॥

ॐ श्री गुहासनायनमः॥

ॐ श्री निगुहासनायनमः॥

ॐ तिन्यासः॥ धनैरुद

ॐ उग्रवज्रमहादेवी, धन
यह गवनी भिठा न क का
मी क नाला सा, विद्युत् काटि
समयुता ॥ श्री गवनेस्क
लाला गम, गिन गवा नूला
सिनी ॥ किरीटी कुलुला
काली, कयू राम निज नू
पूरा ॥ नलमोला विविः
गुण, हाउमा लावलमि
का ॥ मृष्टादगु जाकाः
का, दिव्यवसुमह वि
गा ॥ खड्ग बालन था व
की वजा कु गव माध ना
उम नृक्ष लेपु अ ददि
लघु विना जिना ॥ रुमकी

वधनरुका गजयन्त्रसु
भक्तितापानं न कर्तुं नि
रुक्तं च स्वर्गार्थं कर्तुं य
न कर्तुं ॥ विष्णुसुखं न थाऽ
सिद्धिं सिद्धसुखाय विस्ति
र्गं ॥ अर्द्धस्त्रिंशतिवर्षि
न महिषचमहात्रय ॥ न
द्वी वाउग्रमादिष्टं महा
व्रतयत्रा कर्म ॥ नंदय
नी विष्णुसुखं विष्टुत्वा
वसिष्ठावृहान ॥ ध्याय
नं वसुधादेवो रूगव
वर्गिनमोस्तुते ॥ (गया
षादमरुसी च स्वर्गार्थं
उमरूविना ॥ रुद्रवल्गुय
वृंजव वल्गुय वल्गुनायिका
॥ वल्गुवल्गुवती च वल्गुत्र
पातिवल्गुका नाचना अत्रुध

रुद्रा नीलाशुजावधुविका
पीताशुपालुनाशुया अर्द्धली
वल्गुहविस्त्रिता ॥ यत्रिवाव
समायुक्ता आयातुर्वृद्धमस्तु
ल ॥ ॐ उग्रवल्गुयैव न पृथ
नमः ॥ ॥ गतसुखास्तु ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ उग्रवल्गुन
लमर्द्धनिर्द्धं सदावद्वर्त्तनी
मर्द्धिनी ॥ मृत्पुष्टनमः स्वा
हा ॥ ३ ॥ ॥ पाथ ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ उग्रवल्गुन
लमर्द्धनिर्द्धं सदावद्वर्त्तनी
मर्द्धिनी ॥ मृत्पुष्टनमः स्वा
हा ॥ ३ ॥ ॥ पाथ ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ उग्रवल्गुन
लमर्द्धनिर्द्धं सदावद्वर्त्तनी
मर्द्धिनी ॥ मृत्पुष्टनमः स्वा
हा ॥ ३ ॥ ॥ पाथ ॥

॥ आरमनी ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं व ह्रीं
ग यै ह्रीं व ह्रीं व ह्रीं व ह्रीं व ह्रीं
नमः ॥ ॥ स्नानी ॥ ॥

ॐ क्रीतगवत्प्रीतिं गये सपत्निदा
येस्त्रानं नमः ॥ ॥ चन्दन ॥ ॥

ॐ क्रीरगवत्येसांगये सपत्रिवा
येचन्दननमः॥ ॥ श्रीकृत ॥

ॐ ह्रीं रगवत्ये सांगये सपनिवा
ये अक्षतं नमः ॥ ॥ सिद्ध ॥

ॐ ह्रीं गवतेशांगयै सपनिवा
यै सिद्धये नमः ॥ ॥ ऊजमका

ॐ क्लीं ग व ह्ये सांग ये स प त्रि
वा ये स क्ला प वी न वी न क न म

पूष्य॥ ॐ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
पत्रिवाये पूष्यं नमः ॥ ॥

ॐ क्रीं महाकालाय पादुकां पू॥
दद्यादक्षिण हा॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

जेकां श्रीधुं क्षौं पुं ॥ ज्ञानन्द
 किरौ नवीनन्द ॥ श्रीमहावि
 शानाश्च श्री ॥ धर्मपादक
 पूजयामिनमः ॥ ॥ ॥

मत्तापत्रिवालपूजनै॥ ॥

ॐ क्रीं मूं आं नू द व गु ये पा पू ॥
 ॐ क्रीं लूं लीं प व गु ये पा पू ॥
 ॐ क्रीं उं उं च गु ये पा पू ॥ ॥
 ॐ क्रीं मूं मूं च गु ना ये पा पू ॥
 ॐ क्रीं ऐं ऐं च गु ये पा दू की पू ॥

नत आसनः ॥ यू आ या य ॥ ॥
 ॐ य न्मास नाये याद कां, यूः

ॐ ह्रीं
ॐ सिंह स तथेया इकां. प्र
ॐ ह्रीं महिषा नाथेया. प्र॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ जौं हं सः महा इ (मन्त्र वल्लिका
ह्या म (श्रिया इ कां धृज या मि

नतं ४ यस्मिन्वा स पूजा ॥ ॥

ॐ कं कुं जया ये पा यू ॥

ॐ ह्रीं विजयाय पाद्म

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अङ्गनाथे पायू-

ॐ ह्रीं क्लीं ॥ श्रीं अक्षय्यायै

ॐ क्रीं ह्रीं जूं श्रूं मूं नमः ॥

ॐ ह्रीं श्रीं लुमु नै या यो

ॐ नमो भगवते वासुदेवा ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ नमो भगवते ॥

नादि ॥ शान्तिमुदादय ॥ यत्त

ततामूलयाखवस. नवलासः
दुर्धन्यनी पूजा ॥ न्यास ॥ ॥

ॐ श्री लक्ष्मी दया य नमः॥

ॐ श्रीं ली नमः स्वाहा ॥

ॐ क्लीं ह्रीं लिखा ये वषट् ॥

ॐ ह्रीं कवचाय ह्रीं ॥

ॐ ह्रीं श्रीं नमः शिवाय यो वीरः ॥

ॐ ह्रीं स्रभृन्मय रुद्र ॥ श्रीगणेश ॥

दुग्धलक्ष्मीमहादवी नमामि वि

उद्यानिनी। दाउमीपुष्पसंका

सा. बालनमः (अविचित्रकथ०)

सर्वोत्कृष्टा न संयुक्ता. हाउमा

लावर्णविनी ॥ अथ दशगुः

आजांकी. यीनवदस्तुतीक.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

श्रीगुरुदेवकीपुण्यप्रशंसा

गली का च. चक गली च दः

हि। लन रुत की पा ल ग म ग्री व
 त ऊं नीं द र्श नं व र्ज ॥ ७ ॥ न रू
 लो मु ल का र्ग व न य द्वा म
 कं गु र्ज । सिं हा स न ग टा द वी
 य या नी र स्मि तं वी म हा
 म हि ष मा रू टा द या ४ पा दे
 न य द्दि ता । ल ल न म हि वा
 घा त व क म व्ध त ये व च ।
 क व रू या व ता नी च । काला
 न य स्मि तं वी ॥ व ञ्चा दि मा
 नृ द वी हि ४ पू ज नी यी म ह
 वी ॥ व्ध य मा नी स दा द
 र्ज । न मा मि स व द न ती । तु
 म्ब य यो व्ध न य र्ध न म ॥
 ॥


 पू न र्वा न ॥ ॥ ॥ य या ऊ म
 उं ऊं म्मी र ग व नि धी व
 लि तुं म्मी व य यो या ३ क
 पू ज व्ध य मि न म ॥ ३ ॥

ऊं २

त न य त्रि रा त पू जा ॥ ॥
 उं ऊं म्मी व ञ्चा नी वि श्व या
 उं क र्ग म्मी द मा ह म्मी यो
 उं ऊं व र्ज म्मी को मा री या
 उं ऊं दं ० उं दं वी व र्ज वि श्व
 उं ऊं म्मी दं ० उं दं वी व र्ज वि श्व
 उं ऊं म्मी दं ० उं दं वी व र्ज वि श्व
 उं ऊं म्मी दं ० उं दं वी व र्ज वि श्व
 ॥ ३ ॥ च व र्ज लि ॥ आ वा ह
 ना दि ॥ या नि म्मी द न य ॥


 आ द या वा म हा ग ॥ ॥
 उं ऊं म्मी द न य ॥ ॥


 थ डि ल य द न मा य न पू जा
 उं ऊं म्मी द न मा य न पू जा
 व र्ज ना य पू जा ॥ ॥


ॐ ह्रीं क्लीं कण्ठपालाय वायू॥
 अग्नये॥ ॐ ह्रीं कलपुत्रवद
 कर्धनो य वायू॥ ॐ ह्रीं नमो॥
 ॐ ह्रीं गं गी गूं गृह कलगरा
 वत्र वायू॥ नैर्मृष्य॥ ॥
 ॐ ह्रीं ह्रूं सिद्धि वा मूत्रये वा
 यू॥ वायवे॥ मूलवलि॥
 दक्षदिग्यालपूजा॥ ॥

अवलिङ्गकश्चाह ॥

मूं॥ संपूर्ण कलगाय मृगश्रया
यजु मृगीश्वर किं स हिता
यपादकं पूजया मि॥
एवं वलिं आवाहनादि॥
(धनमूदा नमय ७॥) ॥

मूलयाजवस महाकालवलिपू
जा॥ उं हं महाकालाय सर्वगुरु
प्रमदं गाय पादकं पूजया मि॥
उं हं उं नो ड २ महाकालाय
उग्रदंष्ट्राय रुयंकन ०० त्यादिः
क्रमस्तवनदा मम स्वाहा॥ ॥

मूलया खवस दशवलिपूजा॥
उं जी का की कू कू कू पा ला य
महावल कपि त्रु ल ज टा ला न
रासून सिन उक्षा लामुख ००
त्यादि क्रमस्तवनदा मम स्वाहा॥ ३

हवम आह मूलवलि स पूजाया

मृगवलि॥ ॥ उं जी य ना सना
य या यू ॥ उं जी मूं ग्री सिद्धि वा
मृगयै पा यू ॥ उं जी उ म्मा ल्येः
उं जी मा ह ग्व य या यू ॥ ॥
उं जी की मा या वि श्व य पा यूः
उं जी वै श्वी वि श्व य पा यूः
उं जी वा या श्वे वि श्व य पा यूः
उं जी उं द्रा य नी वि श्व य पा
उं जी वा मृग वि श्व य पा यूः
उं जी मा हा ल श्री वि श्व य पा यूः
वलिं आवाहर्न हि ग्व ग्व मूडाः

वशुक पूजनं ॥ मिलानवलसः
उं जी यी जी कू ल पू ग व दू क
ना था य या यू एवं वलिं॥

गलम पूजा गउजास ॥

उं जी मं गी मूं मूं गी कू ल

गलभययादुकायुजया
मिना उर्वरलि ॥



गममसयुजा ॥ ॥ ॥

उं ऊं न न्दाये या. पू ॥

उं ऊं रु द्वाये या. पू ॥

उं ऊं सु र द्वाये या. पू ॥

उं ऊं सु गी त लाये या. पू ॥

उं ऊं सु त ले या. पू ॥

उं ऊं क विला दिय सु र म मा

रु य ४ या. पू ॥ ॐ ति गममस ॥



॥ ॥ सगुणयुजा ॥ ॥

उं ऊं सु र द्वाये या. पू ॥

उं ऊं व लिय या. पू ॥

उं ऊं या सा य या. पू ॥

उं ऊं रु न म न या. पू ॥

उं ऊं वि ली व ये लो या. पू ॥

उं ऊं क यो चा र्थ या. पू ॥

उं ऊं य र्थु ना मा य या. पू ॥

उं ऊं ना र्क लु या य या. पू ॥

॥ ॥ ॐ ति अरु ण्य ना मा ॥



॥ ॥ को मा नी पू जा ॥ ॥

उं ऊं जां जां ऊं ऊं क यो ज य ग्री

को मा नी का वि त्रु वी या. पू ॥

॥ ॐ व का ल्मा दि अ रु मा रु ख या ॥ ॥



॥ ॥ व हि द्वा नी म दि पू जा ॥

उं ऊं सु र्ग या य या. पू ॥

उं ऊं ना ना य ल य या. पू ॥

उं ऊं र त ल य ना य या. पू ॥

उं ऊं रु व रु वा नी या. पू ॥



रु न सि द्धि पू जा ॥ ॥

ऊं ऊं सु वि ल को या. पू ॥

॥ ॥ ध न ग ल ल ॥ ॥

ताय सांगाय सगणपतिवाताय
 ॐ मम मम पूषा धूप दीप पूजा वलिं गृ
 क्र २ सर्वार्थसिद्धिं मय प्रयच्छ स्वा
 हा ॥ ३ ॥ ॐ क्रीं टं ॐ टं टं ॐ अष्ट
 समहाङ्गाय काधमहाहोत्रवा
 य वेष्मवीगकि सहिताय निम्ब
 वृक्षकूपनीय सर्वथागिनीगण
 सहिताय सांगाय सगणपतिवा
 नाय ॐ मम मम पूषा धूप दीप पूजा
 वलिं गृ क्र २ सर्वार्थसिद्धिं मय प्रय
 च्छ स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ क्रीं तं थं दं
 धेन ग्रीजयेन्मीमहाङ्गाय उन्म
 रुमहाहोत्रवाय वाराहीगकि
 सहिताय अष्टक वृक्षकूपनी
 य सर्वथागिनीगण सहिताय
 सांगाय सगणपतिवाताय ॐ
 मम मम पूषा धूप दीप पूजा वलिं
 गृ क्र २ सर्वार्थसिद्धिं मय प्रयच्छ
 स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ क्रीं पं रं वे रं मे
 ग्रीयत्रिगमहाङ्गाय कनात्म
 हाहोत्रवाय ॐ दायणीगकि स

हिताय उद्भव वृक्षकूपनीय
 सर्वथागिनीगण सहिताय
 सांगाय सगणपतिवाताय
 ॐ मम मम पूषा धूप दीप पूजा
 वलिं गृ क्र २ सर्वार्थसिद्धिं मय
 प्रयच्छ स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ क्रीं यं
 नैलं वं थी कामरूमहाङ्गाय
 हीषणमहाहोत्रवाय वामुष्म
 गकि सहिताय तालवृक्षकूप
 नीय सर्वथागिनीगण सहि
 ताय सांगाय सगणपतिवाता
 य ॐ मम मम पूषा धूप दीप पूजा
 वलिं गृ क्र २ सर्वार्थसिद्धिं मय
 प्रयच्छ स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ क्रीं
 नं वं संहं क्री दवीकाटमहा
 ङ्गा संहोत्रहोत्रवाय महालक्ष्मी
 गकि सहिताय वटवृक्षकूप
 नीय सर्वथागिनीगण सहि
 ताय सांगाय सगणपतिवाता
 य ॐ मम मम पूषा धूप दीप पूजा
 वलिं गृ क्र २ सर्वार्थसिद्धिं म
 य प्रयच्छ स्वाहा ॥ ८ ॥ ॥

ॐ श्री सर्वगान्धर्व सिद्धि करक
 नृत्ताहा ॥ ॐ श्री कौंटी कौंटी १
 श्री कृष्णपालाय वलि गृह २
 श्री स्वाहा ॥ ॐ श्री वांवां वंवां
 कृष्ण लपुत्र वद कनाथ यव
 लि गृह २ स्वाहा ॥ ॐ श्री लं लं
 लं लं १ श्री कृष्ण लपुत्र गणेशनाथ
 वलि गृह २ स्वाहा ॥ वलि मूल ॥
 समस्त मनुषी १० सिंहासन पी १०
 पी १० यपी १० कृष्णाय कृष्ण सखा
 रुद्र सदा रुद्रिदा सिद्धि समय
 कृष्ण दूकी पूजयामि ॥ वलि गृह
 २ स्वाहा ॥ ॐ उक्ता नृकी यद्विधि
 सर्वग्रीह दया यपादूकी पूजः
 यामि ॥ वलि गृह २ स्वाहा ॥ हूँ ह
 ह कनवीनममनाधिपतय
 ॥ वलि गृह २ स्वाहा ॥ हूँ का नाथ
 वलि गृह २ स्वाहा ॥ सर्वथाद
 वस्था वलि गृह २ स्वाहा ॥ सर्व
 यः पिनायथा वलि गृह २ स्वा

हा ॥ सर्वथा नाक सखा वलि गृह
 २ स्वाहा ॥ सर्वथा यद्विधि नृत्ता
 वलि गृह २ स्वाहा ॥ सर्वथा आ
 कासचात्रिणीया वलि गृह २
 स्वाहा ॥ ॐ नृत्तादीन यथा
 लपुत्र वद कनाथ यव
 नावता ॥ ॐ नृत्तादीन यथा
 नवमी पाद्विधि नृत्तादीन यथा
 वलि गृह २ स्वाहा ॥ ॐ ॐ ॐ ॥
 ॐ नित्याक वलि पूजा ॥ ॥

थन समय काय ॥ ॐ श्री अन्नः
 महान्दी दिवा नृत्तादीन यथा
 मन्त्रिण ॥ ॐ दनैव दूकी दुर्ग
 गृहानपत्रमंशरी ॥ इदं काय ॥
 ॐ श्री पीतः पुतासनका मयमूदि
 नमहासे नवा मनुपूर्ति यथी
 यथुसनाथ गणेशुत्र वद काला
 कपाला १ रुणी १ ॥ यकायक
 १ पिनायथा १ पृथु नृत्तादीन यथा

३४ कथमा ला-यागिन्नायाग
यूका जल जल खचरा १ पाणम
तस्यिवनु ॥ पिवतु दवता १ स
वतिरुडा ॥ पिववि यका १ ॥ या
गिनी कथमा ला १ वीनचकं वा
वतिता ॥ ॥ विन्दु विय २ ॥

नमः श्री नाथाय ॥ नमः श्री सिद्धि
नाथाय ॥ नमः श्री कृष्ण नाथा
य ॥ ॥ ध्या १ ॥ ॐ नमः ॥
गुनः १ ॥ व. कर्पू नमः नाहिवा
ध्यावा सधुसर्वं वा ध्यायं य
निगृह्णतां ॥ गुगुनि शलसा ॥
सर्वं वा मवदवा नी दुर्माया
गुगुनः १ विय १ ॥ धृत यूका
विः १ ॥ वल ॥ अथ मय कर्तुं
वत ॥ ॥ दीय ॥ ॐ नमः ॥
नमः दी दीय १ सर्वं वति मिना
यदुः १ ॥ सवा छा स न न शान्ति
दी पा यं वति गृह्णतां ॥ ॥

पञ्चमः १ ॥ चापि पूजा

॥ जाय या य ॥ ॐ नमः ॥ नमः
ये स्वाहा ॥ १०८ ॥ ॥
अथ वा ॥ ॐ नमः ॥ नमः ॥
उपच ॥ १०८ ॥ नमः ॥
सदा नमः १ ॥ नमः १ ॥ नमः १ ॥
ह न नमः १ ॥ स्वाहा ॥ १०८ ॥

मलुलदयकं यदुवा सन. ता
यहा न. क. क. पुच न. स्वा न
दधुस गय ॥ स्वा य य ॥ ॐ नमः
दसा न गय या ० ॥ ॥

ॐ नमः १ ॥ विका ये ॥ ॐ नमः १ ॥
ॐ नमः १ ॥ ॐ नमः १ ॥ ॐ नमः १ ॥
ये विद्वं दधु १ ॥ नमः १ ॥ दवेधा
महि. न नी व विपु या द
या न ॥ ॐ नमः १ ॥ नमः १ ॥

ॐ नमः चालुकार्ये ॥ ॐ अस्व.
ॐ मण्डलाकारं चार्कं यनवः
गवर्गं नत्तदं दगिनं यनः
नस्मिंशी पुत्रवत्तमः ॥ ॐ महा
नी लयर्गोदं स्वप्नरुटकः
धनिर्ली। महागोदं महाकार्यं
कव्यालं नमा न्यहं ॥ वक्ता
मं लकि हस्तं च दवीपुर्वं न
हावली। मयूनास नमा नूटं
वदकं नमा न्यहं ॥ ॐ सर्ववि
ष्टुर्नदवं दवर्षिगणपूजि
नी ॥ ॐ नूत्तं पल्लुहस्तं विष्टु
नाजं नमा न्यहं ॥ ॐ म। धनी
उगवली कनकयूतिवत्तवा
हवा ह्यदलोतः स्वप्नरुट
टादिनम्पुमहिमनिद वि
नवकवीजादिगुम्पु ॥ मय

नं कालस्त्रीलकलधरुजः
सविमृतिः ॥ सविन्दुः ॥ सिं
हस्तवर्गिभगीरुवत्तज
ननीयाउमासुयवली ॥
ॐ धादवीमधूकेटहपुम
थनी यावत्तुम अर्दनीः
वा मा ना म हिवासुव न्य
कवीयावती जासुया ॥ या
साधुमृतिगुस्तुवत्तुद न
ली यादवदवा किना सा
दवीममत्र नूदन्ति नूत्तु
धलीजया वा तु वः ॥ ॐ
या ह्यन्या मधिवासिता ह
गवती नूत्तुवत्तुदिहि
ॐ धनी पुमृखा जयादि
सकला सधा गिनी मालु
न ॥ धनी धनधूपदाय
पल्लुति वल्या नवम्या वि
नं ॥ सौ फदगमी प्रया



नवतिगासावष्टिकायाडव
 ॥ॐ वक्ष्मिन्मशिवनालज
 न्नामिवमिराद्वक्त्रनीला
 हिमालाधुमाहाहमवक्ष्म
 स्फुटिककलानिरावाष्टय
 न्तिगासा १ पूर्वोद्यात्रुड
 वल्लोमृदुदशसूत्रजाख
 प्रमायायुषानीद्वोद्योपीम
 न्नाममत्रिदशमथनाया
 तुमीमष्टवल्लो॥ॐ मायाः
 सुष्टुलेनीक्रियामधुमगाका
 लीकलामालिनीमातमी
 विजयाजयाहगवतीदवी
 गिताममृवीरमकि ४८
 फरवल्लोमिदशनीवाग
 वात्रुणीहववीजोकापीति
 पूनायरायत्रमयीमायाद
 मावीस्रसि॥ॐ वक्ष्मानीक

मलनुसोम्यवदनीमारुथः
नीलीलेया. कोमात्रीविपुदर्थ
नाशनकत्रीचकायूधवैभूवी
। वात्राहीघनघात्रघर्घनम्
खीचन्दीचवजायूध. वासुध
गलनाथरुत्रवगलनरुनु
नमाठका॥ १॥ ॥ ॥ ॥
नेकात्रासनमात्रुर्ग. वजय
घापत्रिस्त्रिती. यद्युकात्रग
नीदवी. श्रीकृद्रिकानिमा
म्यही॥ १॥ ॥ ॥ ॥
कात्रिनर्गोक्तनरुत्रनमिता
मरुमात्रप्रगमी. विष्वाही
वात्रनशापृथुतवजघना
मखलात्रल. गलादवा. मे
वृक्त. गलाहोत्रवत्रकुसुमे
वृवृत्रैः कलातात्रा. सामग्री
कृद्रिकास्थावितरुसुतत

ज्ञानदिद्योद्यमाद्यी॥ ॥
ॐ उल्लुल्लाम्रुजकल्लुकायनिः
गताष्टीसिद्धिलक्ष्मीः यत्रा. क
र्षुत्ररुटिकन्दरुन्दधवलानि
॥ १॥ यत्रायायहा. सीता. नार्ण
वद्वरुतात्रलकनीनिः कर्ष
नीसर्वदा. श्रीमत्यधु. मुखाम्
जादल्लुजायतल्लिनाया
दुर्मा॥ ॥ ॥ ॥

ॐ नमो श्रीः पुण्ड्रिकाने गगल
गलमतिद्वयकीथानिनीधु
वासुधचरुत्रयासकलरुय
रुनीविद्युहात्रागला॥ १॥ यु
व्याद्योर्द्वयदीयेत्रलिवलिधि
निर्गोर्द्वयदीयेत्रलिवलिधि
सीपूजकामामहिमतरुल
दा. यत्रामात्रोयसना॥ ॥

ॐ नमो वधी सकल तीर्थ जल न
पूरुं स्वच्छ यज्ञ वसु (ग) ति
तपुष्य माली यज्ञु या ग्य वि
षय मुनि हि ४ यज्ञ स्तं तं कृष्
मूर्ति लिवल कि पूत नमामि॥

ॐ कृष्ण कृष्ण प्रसवै पृथु तत्र
जघनं चैव वक्रं जिनं हं हा
ला नृणां स्त्रि हं त्वहि कुल
हं नृणां नृचन्द्रा कं वद्वि। वि
(ग) हं विंग कं हं हल नमि व
मर्म द्या न दं हं क नालं सा
य वि (ले) क नार्थ त्रि यु ज न दम
नं त्वी महा काल मी ॐ ॥ ॐ क
गल ममा वि य हं सकल जग
दि दं हं न वी वि ष्य कं हं यत
स्त्रि विंग वलुं जट मू कू ट धनं
नृचन्द्रा कं वद्वि। वा च्छं कं
काल गुरुं त्वहि कुल हं नृणां

वा ह्य हं स्तं धनं तं स्व द्वा मं स्व
प्र हं टं उ म नृ क स हि तं कं य
या लं नमामि॥

ॐ ॐ कृष्ण नी कि या सा मू न व
न न मि ता सा लि वार्म ग ला ह्ना
सा (मे) नी सा च दु र्म त ग व ति
व स्र व मा नृ का च र्म मू लु।
सा वा म्नी वे वू वी सा य ह ग ल
न मि ता वी न जा शं य या ला
सा चै का न क नू या वि वि ष्य
न द या या नि नी ती नमामि॥

ॐ नमः प्रलुकार्ये ॥ ॐ नृ द वा वा
ॐ ह्ना की नाम सा द वी द व न
४ म नृ दा ह ता (मे) नी ग म क
मू नी द वी द र्म ना प्र ति ष्ण
ता॥ का या य नी महा (मे) नी
व लु य म हा त या सा वि षी

सावगायत्री उक्ताली उक्ता
 वादिनी ॥ नात्रायणी रुड
 काली उक्ताली रुड विग
 ला ॥ सुनिद्रा ला गेडमूः
 रवी काल गायत्री न सिनी ॥
 मयस्य नासह सादी विक
 ठाजीक ठाधवी ॥ महादनी
 मूका कगी धावतूया मः
 हावला ॥ अचूतानन्दर
 दाव भाग हनु गिव पिया
 गिव दूनी क गालीव मूः
 लिधयत्रमथवी ॥ ॐ न्या
 ली ॐ न्यावीव ॐ न्या
 ४ य गायत्री ॥ वा गालीनाय
 सिंहीव ही माह रवनाः
 दिनी ॥ अगि ४ सुगिदुः
 मिमिध ॥ विशाल श्री ४
 सत्रस्य नी ॥ अन्नका विज
 यायर्का ॥ मानका कायना

जिगा ॥ हवानी पावनी ॥
 यी हेमवत्यमिका जिगा
 १ ५ नैर्मा मयद ४ मा ४ ४
 सुगान कलधी मता ॥ १
 नमावरुथयमु मयत
 याधिवननात ॥ मावरु
 नसहसुड लेहनवीद्वि
 नरुर्ल ॥ ॐ निस्कन्दपू
 पूना ॥ ॐ न्यादीलाग
 समार्क ॥ ॥ ॥

उंदवानी वसुधी लीवः
 गुरी कावनसं निहं १ व
 मूमूर्ति गिशा कगी ५
 लमासि वृहस्यमि ॥ ॥

कुं विद्युं न्यायवीयायः
 विद्युं न्यायमनम ४ ॥ सर्व
 विद्युं हरी दवी सर्वनामि

नमामुने ॥ ॥ ॥

ॐ नमस्तु कपिलद्वि, नम
स्तु सूत्रयुक्तिनयविगुस
र्वदोधनो, पूजितवनमा
न्यह ॥ ॥ ॥

ॐ शुभला मावलि रीसा
हनूमानोय विरिणोयनः
द्वयपत्र ह्युगामय, माः
कौलुयाय नमः ॥ ॥

ॐ कोमात्रीमयूनामात्रुडा
नकागीनकवाससी, नक्तः
विन्दुमूजावः शुभयत्रिन
मामुने ॥ ॥ ॥

ॐ ॐ हृदवनमस्तुल्य कृत
दवनमानमः ॥ ॥ नदव

प्रहासर्वयुक्तिगृह्णन्मा
मुने ॥ ॥

ॐ या कृष्णदुष्मानहानध
वलायागुजवेमुवता, यावी
धनवदधुमपुनकलाया
धनपद्मासना, यावक्राच
नसैकप्रपुनितिरिद्वेः सः
दावन्दिता, सामायाउसनः
स्वगीरगतीनिः ॥ नययाशा
पहा ॥ ॥ सहस्रियाथ ॥

ॐ सर्वमन्त्रलमास्त्य निवस
र्वार्थसाधिक, ननयशुच
कलोत्रि, नानायनिनमामु
ने ॥ ॥ कलसया ॥ ॥

ॐ उमान्तिनकपुविकागवर्गु
दवाधिनार्थवृषतासनम् ॥

विष्णुहस्तं त्रयाक्षं माला मयू
अथैषी प्रणमामि निर्या ॥



ॐ यथा वाण पुद्गलाणां कवच
कवचुवात्रणं ननु देव विधा
तामां गमिर्कवचुवात्रणं ॥
ॐ श्रीसम्बलामणुलान्क कमप
दनिहितानन्दगकिः सुशीमा
सुहिन्वायवकुर्कलकलकल
गर्भपञ्चकं चान्यवद् ॥ चत्वार
४ पञ्चकान्यः पूनत्र पिचयुनरु
त्वगामणुलदे ससृष्टयनतसो
नमस्तु नूवर्न सेनवैधीकजनी ॥



ॐ नमस्तुष्टिकाये ३ ॥ ॥
धीनूदउवाच ॥ ॥ नमस्तु न
महामाथ सुसूदहच नायन
॥ एकाकिनी विगुहात्म दाना
रथविन्दुमालिनी ॥ अदहात्र
समस्त्यनं अत्रैव विष्टधामिः

लिपमहाकुलनीनिर्या हंस
मध्यववस्मिता ॥ सामसूया
प्रिमध्यस्तु ग्रामयापिपनाय
न ॥ उं कात्र विप्रहावस्तु हका
नार्द्धवृ पिलि ॥ बालाप्रण
न ॥ सुसू अत्र न वाद्ययवा
य ॥ रुका नार्द्धकला न ॥ रु
पद्मकिंजल्क माग्नित ॥ सक
लाय महामाथ वनदलाक
पूजित ॥ एकैकनातिमधुस्तु
मर्मन केकरु दिनी ॥ अष्ट
लिङ्गकलाधाले रुदिनीव
क्रत्रधु ॥ विष्टुत्तमानिराद
वि ॥ उजङ्गकटिनाकन ॥ उ
क्राविष्टुष्टनूदय ॥ वीष्टनय
मदामिव ॥ एत पञ्च महाम
ना ॥ पादमूलववस्मिता ॥
॥ उं लाकुजननीदवी नम
स्तु गकि नू पिलि ॥ उं उवि
गलमधुस्तु मृगलेनरु

वृषिदिवा विन्मधुगतं दवि
कृटिलं वाद्विचन्द्रकं गुणानक
लिकारुसं द्वादशांकां कावर्त
विनि॥ उमाईहस्तं (गोत्री, द्वा
दशदित्यवर्चसं गून्गून्ग
कृतावस्तु, हंसाख्ययागधनि
वि॥ लम्बाख्यपत्रमद्वी, दक्षि
ला रुतगमिनि॥ नाग (प्रगुस
मूली, लुम (धसुगुषवाहिनि॥
हस्तं खपत्रमानन्द, तालूम
द्विष्टवस्तु॥ नादयणीकसं
पृष्टं, गुणहकसमन्वितं ॥
स्तुतस्तुतस्तुतं दूषं, धर्माध
र्मपुटद्वयं, काशी कावर्तक
कृतं, विगून्गनादविग्रह॥
यत्रायत्रयत्रगुहं, वेतन्यं
व्यतधुवं, सर्ववर्णधत्रीद्वी
उक्तं तत्त्वतिविग्रहं ॥ लकिम

लमहाग्रह विन्मजसमन्वि
तं, भूगोत्रीनमहाकाय, सैता
नार्धुवताविनि॥ जयाचविज
याचैव, जयनीवायनाजिता
गुम्बूवीजमधुस्तु, नमस्तया
यमाचनि॥ वधमादकनीद
वि, धाउल्लनद्यवस्तु॥ ह
दिनीलकिमूलन, महाग्रह
समन्वितं॥ उमलीयामली (गो
त्री, मायायकृषवाहिनी॥ स्व
कृन्दहेत्रवीदवि, सका (धम
कृन्दहेत्रवी॥ पंचांगद्वर्णुद्रयस्तु
श्रुयात्रुजाष्टकीलिता॥ अ
मृताख्यत्रुष्टु (गु, नमः का
यालिनीलिवं॥ त्रुईकिनीम
हामाय, नमस्तुज्ञानहेत्रवी
। दीष्टकृतविग्रहिक, ता
त्रकादीहयाननं॥ नमामि
दवदवलि, अष्टात्रयान

त्रुपिदि। कालामुखी वगवती
 उमादवीनमासुन ॥ यागिः
 नीवगियाद वि। (नेत्रीलक्ष्मी
 १ सनसनी। हंससुनाई। गद
 वि। ॥ मुखी। किमालिनि।
 काष्टकीगुरुगदवी। इन्नेका
 लायनीमिवा। निर्यकिनास
 माख्याना। नकावेकादरापना
 ॥ वाक्कीमाहृषीचेव कोमा
 नीवेष्टुतीगथा। वागाहीचेव
 माहृडी। यामुष्टु। रवानता
 ॥ या। गगिल्वहिदव। निकला
 एकविहृषिन। ॥ उन्दीचेव
 आ। प्रया। याम्यानेमृष्टवावृणी
 ॥ वायवाचेव कोव न। ००। ग
 नसमूदाहृदा। पुयागववृष्ट
 काला। अष्टहासायेऊनिका।
 चत्रिजेकाप्रक। येव दवीका
 हनुवाहृष्ट ॥

मं१

अमिना। गवृष्ट ॥ ४४ ॥ काध
 उन्नेरुं रुवृष्ट केरातीहीव
 व। येव संहाव। येव वाष्ट
 धा। तथा काली उमादवीः
 दवदूगिनमासुन ॥ रुउ
 कालीमहाद वि। चर्ममृष्ट
 रुयावह। महा वृष्टमहा
 नमं नमस्तुमकिं त्रुपिदि
 ॥ हृष्टुवृष्ट ॥ निसा हाक
 दयाल्वरुष्टुष्टमं ॥ काना
 थिनामहापाथ ॥ उन्दि
 कामिवदिष्टु ॥ यष्टिदय
 ० नं स्तोत्रं ॥ गिर्मृष्टीचेवमा
 नवृष्ट। याप्रानिदिनिगानः
 कामान्। मुनीरुवनिचले
 रुष्ट ॥ ॥ ००। गिर्मृष्टमकि
 नमरुत्तमहामायास्तोस्तस
 माफ ॥

कुम्भारिः श्रुतीसनाथगल
उत्रवदु का साकपाला ४ रु
लीला ४ शक्रा २ रु ४ विभक्त
४ पृथुनरसकलासात २४ दे
नयाला यागिन्नायागयूका
जलत्रयखत्र रा ४ यागमन
सिवनु ॥ यिवनुदयगा ४ ३
सर्वो ३ ४ श्रेव विनायका
४ यागिनीक्षुयालाधवी
ववकुयवह्निगा ४ ॥ ॥

दवा ॥ वीद विद्यथन ॥ ॥
ॐ उका न करवकि पूरि
जगता ४ ॥ श्रुती वासक
हृन्नीगग ॥ यमाह ग
वनी वि ॥ श्रुती ४ ॥ दि ॥
स्नातागम्य कलेश्वरी कल
गल वा ४ ॥ यदिकायकाशी

वामी पुननासि वि ॥ ४ ॥
नीद ॥ श्रुती सिद्धि दी ॥
कल्यानतन मूल मू ॥ ॥

आत्माणी वीद ॥
ॐ शुभयुक्त गतयदरुगव
ता ॥ श्रुती नूयातर की ॥
नक्षत्रलानथद्विह
त्री ४ ॥ मयी वि ॥ य ॥
सु ॥ व ॥ य ॥ व ॥ क ॥ न ॥ ग ॥
यीथागि नार्प वक व ॥ द्वा ॥
मिमरी वि ॥ व ॥ क ॥ म ॥ स ॥ म ॥
उनि ॥ व ॥ क ॥ उ ॥ गी ॥ ॥
थ ॥ डि ॥ ल ॥ स ॥ वा ॥ द ॥ स्या ॥ न ॥ व ॥ क
नि ॥ ध ॥ क ॥ को ॥ या ॥ व ॥ क ॥ य ॥ ॥

अथ यागादक नारिषक
का २ य ॥ ॥ ॐ उका नू
लयादा हस दे मलवशी

उदशराग्निलिं (म) वायू
या प्रा कि नो घ ४ न गि न क
ले कला वि नु ना दा द्वयू क
४। नि र्झ न न म धा रा मृ रूप म
कला रें व वा म कु मू लिं ४ पा या
द्व वा न वा सा सक ले रु रु रा रें
व ४ श्री कू उं ग ४॥ ॥ ॥

वचन नय ॥ उं वचनं लपि नं
पूर्व पविर्ग पाप नाग नं ॥ आ
पदा रु र न नि र्ण लक्ष्मी स क
नि व र्द्धनं ॥ ॥ ॥

सिन्दूर नय ॥ उं सिन्दूरं श्री स
मालि श्री सी रा ग्ध रु ले प दं ॥
सं ग्रा म ऊ य मा प्रा गि सिन्दूरं
दृष्टि दा य कं ॥ ॥ ॥

आनीर्वा द खान सकल रू ॥

उं आमात्र का विन शा क न र न
न मिता म रु मा त न गी मी वि
भा षी वा नू न गा पृ थू त न र ज यः
ना म र व ला व न (ग) ता ॥ थ वा
(म) र्क म (ग) रें व र व न कू स म
व र्व रें ४ क ग रा ना सा म श्री क
डि का र वा वि न र यु स ग रं क
न दि वी द्य मा र्घ ॥ उं या द वी म
धू के ट रु य म थ नी या च गु मू
उं र्द्ध नी या मा ता म दि षा स
न द्र य क नी या न क वी जा अ
या ॥ या सा गु न नि गु मू व गु
द न नी या द व द वा कि नी सा
द वी म म न द द दि ण गु जे श्व
श्री ज या घा गु व ४॥ उं या ग नी
गु व न ध्व नी सू त व नी सं ग्र म सि
द्धि क नी य द्ध न्द्रु र्नि दं ल कि
न न व रें ४ संपू जि ता सर्व दा ॥

जाती चमक क कर्णिकात्र नि क
त्रे ४ पुनाग नाग क ये स्नान
वी सतत नमामि नि त्र साल
श्री प्रभा पाहू ली ॥ ॥

ॐ उं उं उं उं उं उं उं उं
न्याय लिकाय ॥ ॐ मृ लू रु न
अमु यरु ॥ ३ ॥ कर (मधनी ॥

ॐ श्री राज प्रद अंगु राखी नम
॥ ॐ उं उं उं उं उं उं उं उं
म ॥ नम मर्द नि मध माखी न
म ॥ ॐ उं सदा न क २ अना मि
काखी नम ॥ ली मी री स ४ क
निष्ठा खी नम ॥ मृ लू रु न क
न ग ल पु षा खी नम ॥ ॥

ॐ श्री राज प्रद रु
दया य नम ॥ ॐ उं उं उं उं उं
नम स्वाहा ॥ नम मर्द नि निरवा

ये वोषट् ॥ ॐ उं सदा न क २ क
व चा य ॥ ली मी री स ४ न ग
य चा य वोषट् ॥ मृ लू रु न अ
मु यरु ॥ ॥ ॥

वलि वि स र्ज न या य म न व ॥
सूर्य साक्षि थ य ॥ ॥ अस्म
दा दी नी मा यू ना था ॥ ये थ य
जन धन लक्ष्मी सक नि स कान
वृद्धि मू कि का म नार्थ म हा
न व मी पा र्व थ उ ग्र व थु दि
द वा च न पू जा र्म पू र्ण र्थ क
न क र्म (साक्षि (ग्री सूर्या
मूर्क ॐ द म र्द नम ॥ ॥

जि ना च म्या ॥ विष्णु ३ ॥ ॐ
ॐ उं ॐ उं ॐ उं ॐ उं
न त ४ को ना री ला जा पू जा या य
॥ य द वा स न वा य ना य हा ना ॥

१५ हाजातय ॥ ॥ पूजा ॥

लखन हाय ॥ ॐ स्वस्ति नमः ॐ

दा वृद्ध ॥ चन्दन ॥ ॐ यदयक

॥ सिन्दूर ॥ ॐ लज्ज विष्टदा ॥

ज्जमका ॥ ॐ यज्ञायवीत ॥

स्नान ॥ ॐ आरु लानि ॥ ॐ

अथादि ॥ अस्मदादीनामा

थादि महानवमी पार्वत्य

कीमत्रीदशैव न निमिर्त्य

धीसूर्यायार्धनमः ॥ ॥

ॐ आकृष्ण नमः ॥ पूषा नमः ॥

ॐ नमस्तुभ्यं ॥ गायत्री नमः ॥

ॐ नमस्तुभ्यं ॥ गायत्री नमः ॥

ॐ नमस्तुभ्यं ॥ गायत्री नमः ॥

ॐ नमस्तुभ्यं ॥ गायत्री नमः ॥

ॐ नमस्तुभ्यं ॥ गायत्री नमः ॥

ॐ नमस्तुभ्यं ॥ गायत्री नमः ॥

विष्णवन्द ॥ ॥ ॥

ॐ यदस्कन्द ॥

ॐ वक्रयज्ञानं पथमं पुनः ॥

ॐ नमः ॥ गीतवायवमया ॥

ॐ यज्ञवा ॥ सयदनि कुमा ॥

ॐ ॐ दविष्णु विचक्रमय ॥

ॐ यस्य कूर्मो गुरुदवि ॥

ॐ जातानिन्दममृता नमि ॥

ॐ जातवन्दसष्टय्यावसा ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमस्तुभ्यं ॥ गायत्री नमः ॥

ॐ नमस्तुभ्यं ॥ गायत्री नमः ॥

ॐ नमस्तुभ्यं ॥ गायत्री नमः ॥

ॐ नमस्तुभ्यं ॥ गायत्री नमः ॥

ॐ नमस्तुभ्यं ॥ गायत्री नमः ॥

ॐ नमस्तुभ्यं ॥ गायत्री नमः ॥

ॐ नमस्तुभ्यं ॥ गायत्री नमः ॥

ॐ स्वस्ति नमो बुद्धाय वा स्वस्ति नमः ॥
 ॐ ययः पृथिव्या यया अमयी ॥
 ॐ विष्णु न नाटमसि विष्णु ॥
 ॐ भूमिदं वता वागाद वता ॥
 ॐ धौः ॥ किं न क्विदा ॥ धूप ॥
 ॐ धूतसि धूर्ध्वं धूर्ध्वं न ॥ दीप ॥
 ॐ तज्जासि लुकमसि ॥ रुली ॥
 ॐ याः ॥ रुलि नि याः ॥ रु ॥ नेशय ॥
 ॐ अन्नयत नन्धि नाददि ॥
 ॐ नमः ॥ यत्तु यत्तु यत्तु ॥ ता य
 ॐ मना श्रुति ॥ यति सा न ॥

॥ गुरुतेव दार्ढ्यं ॥
 पुनर्विलम्बन्यासः ॥ कं ४ अं ॥
 ओं यं रुं ॥ कं ४ अं ॥ गुं ४ अं ॥
 नमः ॥ कं ४ अं ॥ नीं ४ अं ॥ नमः ॥
 कुं ४ अं ॥ मां ४ अं ॥ नमः ॥ कुं ४ अं ॥
 मिं ४ अं ॥ नमः ॥ कं ४ अं ॥ निं ४ अं ॥
 नमः ॥ कं ४ अं ॥ नमः ॥ कं ४ अं ॥
 नमः ॥ कं ४ अं ॥ नमः ॥ कं ४ अं ॥
 कं ४ अं ॥ नमः ॥ कं ४ अं ॥

ये वषट् ॥ ऊँ कठवाय नमः ॥ ऊँ
 नगुगुयाय वषट् ॥ ऊँ ॥ अ०
 स्त्राय रुट् ॥ ॥ अ० वा न
 रजा ॥ ऊँ हृदयाय नमः ॥ ॥
 ऊँ गिरसुखा हा ॥ ॥
 ऊँ गिरवाये नमः ॥ ॥
 ऊँ कठवाय नमः ॥ ॥
 ऊँ नगाय नमः ॥ ॥
 ऊँ अस्त्राय नमः ॥ ॥
 ऊँ अर्धवागुय रन्द नाइनय
 र्वाय नमः ॥
 ऊँ अर्धवागुय र्वाय नमः ॥
 ऊँ आत्मनसि र्वाय नमः ॥ ॥
 सर्वेषां रुण ॥
 ऊँ आत्मनसि र्वाय नमः ॥
 ऊँ आत्मनसि र्वाय नमः ॥ ॥
 ऊँ आत्मनसि र्वाय नमः ॥ ॥

धनधनकृपु ध्याय ॥ मालिनी
यलयी आवाहन याय ॥ ॥

ॐ नमः प्रलुकाये ॥ श्री हे नव
उवाच ॥ अयत्न मालिनी दवी
यादि ॥ ॐ ह म लु ल अ ह मा
वा ह यि धा आ वा रु य ॥ ॥

आसनतयः स्नानतनै ॥ ॥
ॐ आ ध न ग क य न म ॥
ॐ अ न का स ना य न म ॥
ॐ क न्दा य न म ॥ ॥ ॥
ॐ ना ला य न म ॥ ॥ ॥
ॐ य धा य न म ॥ ॥ ॥
ॐ य ला य न म ॥ ॥ ॥
ॐ क ण ना य न म ॥ ॥ ॥
ॐ क र्ति का य न म ॥ ॥ ॥
ॐ म यू ना स ना य न म ॥ ॥

तमा ध्यानी ॥ ॐ व धू का रू ण स

का ली ॥ त डित्का टि स म प री
॥ ह री वि म्ब नि र्हा द वी
॥ ॐ म त्वा ह सि ना न ना ॥ ॥
या ल रू पी म हा का री को मा
री गु म्ब रू पि ली ॥ ॐ क
व ड डु र्जा का री ॥ पू र्ण सि
ग कि रू रू का ॥ य द्य ना ग
म लि मो ली ॥ मू का ली का ने
रु चि ती ॥ नि र्वि ना ड स मा रू
टी ॥ वि द्या क ल्म नि का रि नी
॥ सो ला ग्ध र्म य दौ ल द्मी ना ड
यू ॥ यु रू य ण ॥ लि यी ॥ सर्व का
म ष्ठ री द वी ॥ सर्व श्रा वि म रु
ष्य री ॥ अ ग कृ पु स्ति ती च क
ते ला कृ स्ति ति का रि नी ॥ ध्या
त्या द वी स दानो मि ॥ को मा री
धु र्म ग ली ॥ को मा री द यी
ध्या न पु र्ण न म ॥ ॥

जयाभूति॥ नंदोलीं भुं भौं
वै भौं जमं भौं नंदोलीं म हो ज
य को मारी का वि चणी यादु
की पूज या मि॥

नंदोलीं भुं भौं भौं व मा यनी
वि चणीं नंदोलीं म हो न वा य
पादु की पूज या मि॥

नंदोलीं भुं भौं कं मा ह न्यनी
वि चणीं नंदोलीं म हो न वा य पादु
की पूज या मि॥

नंदोलीं भुं भौं च को मारी विः
नंदोलीं चणीं नंदोलीं म हो न वा य पादु की
पूज या मि॥

नंदोलीं भुं भौं नंदोलीं व वि च

नंदोलीं भुं भौं न वा य पादु की पू
ज या मि॥

नंदोलीं भुं भौं नंदोलीं व वि चणीं
नंदोलीं नंदोलीं म हो न वा य पादु
की पूज या मि॥

नंदोलीं भुं भौं नंदोलीं व वि चणीं
नंदोलीं नंदोलीं म हो न वा य पा
दु की पूज या मि॥

नंदोलीं भुं भौं नंदोलीं व वि चणीं
नंदोलीं नंदोलीं म हो न वा य पादु
की पूज या मि॥ ॥ ॥

नंदोलीं भुं भौं नंदोलीं व वि चणीं
नंदोलीं नंदोलीं म हो न वा य पादु की

पूजयामि॥ ८ ॥ ॥ ॥

ॐ क्रीं श्रीं ह्रीं स्रूं श्रीं आन
न्दन किरीतवा मन्त्र नन्द
धीमहाविद्या श्रीनाथ जय
त्रीपादकाम्यजयामि ॥

आवा रुना दिवन्दना द्वागपू
ष्यनमः॥ आनिमूडान्दर्मयः॥

श्री गुरु वलिस पूजा ॥ ॥
 वंद्यो ग्रीष्मो दौर्गमालाः
 यथादूका पूजयामि ॥ नव
 वलिं गृह्णस्व हा ॥ ॥ ॥

दक्षिणजवस्वदूकयूजा॥
त्रैलोक्येश्वरी श्री वावदूकनाः

अथ पादकां पूजयामि ॥ ७ ॥
वैवर्ति गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॥

वामस्ववसुगलमगज्जा ॥
 त्रैलोक्यगलपतयपादकीपू
 जयामि ॥ वर्तिगृह २ स्वाहा ॥

ॐ समस्त मनुष्याः १० सिंहासन
 यी १० ययी १० दशाय दशसं
 दारुप्रसं दारुदिशसिद्धि स
 मयवकपादुकां पूजयामि
 वलिं गृह्णामि ॥ दमस्त
 वदामम ॥

धूय॥ लं नृयु नृयु नृयु नृयु व.
 कर्ण नृयु नृयु नृयु नृयु व.

सर्वसर्वं ध्यायति
गृह्णीति ॥ दीप ॥

ॐ सुषकाण्यदादीपः सर्व
प्रतिमिनाय रु० सुवाञ्छाया
नरैः प्रति दीपयति गृ
ह्णीति ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ जाय ॥ नैः ॥ १० ॥
॥ ॐ जयं कृत्वा पुस्तिका ॥ ग
नि नञ्च नि सर्व कि लिखी
अहि सुहृल दद वि जयं
तस्यति गृह्णीति ॥ ॥ ॥

मनुलदयक ॥ स्मार्त्त १०
॥ ॐ नमः श्रीचण्डिकायै ॥
ॐ अखण्डमनुलाकात्रमि

ति ॥ ॥ स्मार्त्त ॥ ॥

ॐ नमः श्रीचण्डिकायै ॥ ॥
ॐ ध्यात्वा यो मर्त्यं सैकं लभ
लत्र विनिर्द्वन्द्वं दहसं वि
नर्गं स्वर्गं स्वर्गं दामदं केरु
लकधरं कामकं वामह
स्तं वाभातुल्लवद्वीप
नृगसिगक रापाण विनु
दिहसं नोमित्री द्वात्र म
(ध) स्मिन् कलूषहर्तुं
गुनाथं वद्वं ॥ १ ॥
ॐ आनन्दं भयनदं वद्वं
ककुत्ससुगं वकवन्धक
वर्कं वद्वि द्वालाशुनर्ग
वद्वं वद्वं न द्वात्र दद्वं
सैकं १ गकि वा माख्यहसं
पूनत्रयि विधुन वीवैवा

यादिहस्तं नोमि श्री लत्रयः
क न क म लि नि ह सिद्धि ता
व प्र दार्ग ॥ ॐ विष्णु न पद
हस्तं गिवसुन विदिगं वा नू
इहं गिनर्गं लासुनं गमक
ला वं सिनक वसमहं दान
का म प्रसहं । सुर्गं दत्तं च
मृत्तय र मुध र करं मूमः
वैलजुयार्गं दवशी क ऊ
वास्तं विविध रय ह रं का
य सिद्धि युदं ॥ ३ ॥ ॐ
की मा श्री गि सि वा ह न प्रक
ग ला ग कि धृ मा सु न्द री सा
द वी स व सी तू ह र्जु न य ना
संयू ना सर्व दा र सा रा सा तू
दा व र्जु नी गु ण ग ले ४ मी ल
य सिद्धिं क री नां द वी स ग
न न मा मि वि र सा दा रि ड ड
४ ख छि दं ॥ ४ ॥ ॐ हं सी

पूष्पाधिका श्री अत्रय न रतिः
ला का ल रा गी र वा नी ॥ ॐ
पू री वृद्धि का र्था न व न व क
धिया सिद्धि ल श्री ४ प रा श्री
॥ ला सा ना र्था प रा र्था ॐ
इ व न ज न नी रा ज रा ऊ थ
वी ला म का म ने क तू पा स
क ले सु ज न नी नो मि द वी
क मा रा म् ॥ ॐ ॥ ॐ र क
सिं दू व व क्क न डि न यु नि नि
ला द ह का नि ४ सु र्ग जा कोः
मा री वा ल तू यी उ ह सि न व
द ना ह र्थि ना हा र क थ १ ॐ
दा सिद्धि पु दा ना द रि न रु य
ह रा स र्व क र्म पु ग ला सा द
वी वा दि ग कि स्तु उ ल व र स दा
सं तु ग उ रा ज ले श्री ॥ १ ॥
ॐ वृ क्का णी क म ले न्दु सो म्य
व द नी मा ह र्थ वी ली ल या

वासवं. लुगनी गग (अथ मारु
गवती. विष्टुष्टुदक्षि. (८) । क्ला
नागम्य कलंष्टुत्री कल गगवा
नूयु दिक्षुय का. श्री वामाष्ट
मासि विष्टुजननी. नू. (नष्टुत्री
सिद्धिदा ॥ कलाननन ॥

आत्माभीर्वाद ॥ ॐ अम्ब पूर्वग
नं पदं र गवती चैक न्य नूपात्त
का. कानका वदुलानधरुनि
हरो वक्रामनी चिगुय. राख
होव पधर क नूगुतं श्रीया
गिनी गधर क. चन्द्रा कर्माग्निम
नी चिषदु मलमा पा. नित्यं
क. अमी ॥ खान चि कर्ध काया
व. कुर. दव. ॥ ॥ ॥

न्यास. कः अम्बुयह ॥ पूर्ववत् ॥

कोमारी राजा. विसर्जुनयाय
॥ ॐ उदय नमस्त्वयि ॥ ॥
सूर्यसाक्षि थाय ॥ प्राकान
समय काय ॥ थं काठिनीनः
कोमारी राजा काय ॥ दक्षिण
जव १ नय ॥ कोमारी राजाः
काय ॥ पूजा रुष्टि. मत. कलल
विसर्काय ॥ लिहावलदाव
वत. सिद्ध. मादनीननय ॥
खाने कुर ॥ कोमारीया सम
य. ख. मया. समय. द. उलि. अ
दि. सक. लिनी. वत. खानेः
समय काय ॥ रा. क. ली. कान् ॥

ॐ मिमदानवमी पूजा वि
धीन. समाधि ॥ ॥ गुरु ॥

श्रीमहामाया श्रीमिन्न ॥

अथ दत्तमी पूजा विधिः ॥
 अथादि ॥ अस्मदादीनामायू
 नाभा ॥ अथैश्वर्यजनधनलक्ष्मी
 सकृत्तिसक्तानवृद्धिमूर्त्तिकाम
 मर्थमहादत्तमीपार्वत्युद
 वीविजयस्वप्नयागाउग्रः
 वधुमदिदं वार्जननिमित्तार्थ
 धीसूया आर्घानमः ॥ ॥
 ॐ आभू ननऊसावरुमाना ॥

सर्वपूर्ववद्विधाननपूजनं ॥
 दवादि आत्मागीर्वादलधून
 क ॥ वलाशने दाव स्वप्नवि
 सर्जनयाय ॥ ॥ ॥

ॐ ह्रीं या नु द व ग ण ॥ सर्व
 पूजामादाय सारदा ॥ ॐ
 कामप्रदलाय पुनरागम
 नायव ॥ थलिलविर्जन ॥

स

ॐ ह्रीं ह्रमस्व सर्वमन्त्राय
 निलानन्दकनायव ॥ धर्मा
 र्थकामभाक्ता ॥ पुनरागम
 मनायव ॥ न्यासः पूर्ववत्
 ॥ वलिविर्जनं ॥ थनं
 निवलि ॥ थय न ल ॥ सूर्य
 साक्षा ॥ ॥ ॥

स्वप्नज्ञाययान लोहामसः
 धनन स्वस्तिक था पाव स्व
 पुत्राय कथनं ॥ वाक् ॥
 ॐ ह्रीं स्वप्नस्त्वमीक्ष्णामासि
 सर्वगं कुर्यं कनी ॥ १७ स नी
 सिजयं दहि स्वप्नसिद्धिं
 नमो नु न ॥ ॥ ॥

नवसिः सरुनी स्वानसहित
 न स्वपुत्राय ॥ सिद्धलथ
 लास ह्रमस्व न न य ॥ ॥

अथ याग्यालं ख क ल ग स
न स्यं अ रि स म वि य ॥ ॥
ख पु नि हा य ॥ ध का लि य
मू ख न स क ल्य हा य ॥ ॥

कुंडु का शानु य पा दा ह स क
म व तु आ उ द या वा नि लि ला
वा य र्वा या डि भौ घ श ग नि
म क ल क ला वि नु ना दा क
यू क श नि र्वा ण म्भु वा रा
मृ क प र म क ला रे व वा म
नु मू र्ति ४ पा या द वा न वा
ला स क ल रू प ह वा रु र व
४ श्री कृ ज सै ॥ ॥ ॥

कुं व न्द न ॥ कुं व न्द न ल पि
नं यू र्वा य वि र्वा य वा न न
आ य दा ह र ग नि र्वा ल म्भु
स क मि व र्द न ॥ ॥ ॥

सि न्दु र ॥ कुं सि न्दु र स र्व सः
मृ ति सो ला ग्य रु ल दा य
कं १ स य म ज य मा प्रा नि
सि न्दु र द वि दा य कं ॥ ॥

मा ह नि ॥ कुं ह मा रू य स रू
य न कुं सा र्वा मा ह का र क
१ अ र्वा कृ ण ल ला टा य म्भु
हं ल ह स य मि न ॥ ॥

स गु ण ॥ कुं सि द्वा र्थ द मि पा व
नं व स गु णं स र्वा रू व डा य म
अ य १ स प द का र णं व स हि
नं स र्वा र्थ सि द्धि प द १ दी र्घा
यु धि र का र ण वि ज य न
स र्वा स दा र्वा कि न सा र्वा
व कृ ज गृ त रू ग वा न नं
स दा यो गु व ॥ ॥ ॥

थ कालिन की निन नवल्ला
न पूया व वि य थ का नि यः
द व र का य ॥ स क ल्या त वि
य ॥ वा क ॥ ॐ गूलन पो हि
भा द वि पा हि र व न न र्वा वि
क ॥ घ णु स न न न हि पो सा
प ज्ञा नि स्त न न च ॥ आ गी र्वा द ॥

ॐ ग्या मान का जि न ग रू न र
न न मि ता म क मा र्ग ग म मी
वि भा षी वा न न ग पृ थू न
ज घ ना म र व ला न त्र (म र्ग)
द वी (ने र्व मु (म र्ग) र व न
क स मे र्व र्व रे ॥ क न र्ग वा सा
म ग्री क डि का र्वा वि न र नुः
स र ग र्ग न दि शी घ मा र्ग ॥
ॐ या द वी म धू के ट रू प म थ
नी या र व मु म्भु र्द नी या मा
ता म हि षा स न द य र्नी या

न क वी जा मु या ॥ या मा मु क
नि मु क व मु व न पी या द व
द वा कि नी सा द वी म म न द
द दि ण मु जे धु धी ज या पा
उ व ॥ ॐ या (ग नी) उ व न मु
नी स न व नी र्ग म म सि दि
क नी य क नु र्म नि दे र्ग कि
न न व रे ॥ र्ग पू जि ता म र्ग
दा ॥ आ गी र म्भ क क र्गि का
न नि क रे ॥ पु न्ना ग ना ग क
रे स न्द वी र्ग न र्ग न मा मि
नि न सा ल र्गि प मा धा र्ग ला ॥

आ न ति ॥ ॐ ग आ रि ॥ ॥
प ति ष्ठा ॥ ॐ म ना र्ग नि ॥ ॥
क स क न मा य स क स न ॥
स क ल र्ग ना य हा ल ॥ ध र्ग
लि र्ग द आ दा व दि ग या
ति न र्ग द दा र्ग सा र्ग थ

कादि कथनवन
 ॥ वाक्का ॥ ॐ मंगलार्थला
 लाय. क्षमाय विजयाय
 वा. ॥ यद्विनामय.
 पुनरागमनाय च ॥ लाय
 वास्यता ॥ ॥ स्थितिनामि
 मीता ॥ स्थितिवाचनयु
 यं लिखवय ॥ स्वयं आदि
 न. दर्वसमस्तं. कलनं. व
 लिका. ॥ ॥ थवितादिन
 समस्तं. नवरात्रमादा
 थयस्तनय. कोलादस्त
 नय ॥ ॥ ॐ तिस्रदादशमी
 विवर्तनं पूज्यं ॥ ॥ ॥

॥ अथ चतुर्थी विविध कथन ॥
 निर्माल्यवकीर्त्याय ॥ अथ ॥

॥ अथ स्मदादीनामायुना
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 कतिस्तु नानवृद्धि मृत्ति का
 मनाथ. स्वयं गृह लीजन च
 पुर्थी कर्म निमित्तार्थ. श्री
 र्थायार्थानमः ॥ ॐ आ क
 र्ण ॥ ॥ पुष्पानमः ॥ नवरात्रमा
 कुक्याविधाननरुकावि
 धिन पूजायाय ॥ समयका
 यमाना. जयस्तु. ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 दिक्षी ॥ ॥ विस्तृतनयाय ॥
 ॐ आलुदवगण ॥ सर्व पू
 जामादायमानदा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 कामप्रदलाय. पुनरागम
 नाय च ॥ ॐ उदयक्रमस्तु ॥
 सूर्यसाक्षी ॥ अस्मदादीना
 मायुना ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 लक्ष्मीस्तुतिस्तु नानवृद्धि

प्रकि कामनार्थ स्वप्न गृहं
जन चतुर्थी कर्म पूजा संपू
र्णार्थ कृतम् । (१) साद्वि । (१)
ग्राह्यार्थ यमूर्ध्वं दमर्धं
नमः पूष्य नमः ॥ ॥
स्वप्न दव समस्त भा कर्त्तव्यं
यथा यम ॥ ॥ ॥
ॐ ति चतुर्थी कर्म पूजा वि
धि समाप्ता ॥ ॥

उपवत्तु या वीज मनु ॥
ॐ ॥ १ कात्यायनिया वीज
मनु ॥ २ ॥ १ दुर्ध्वं वीया
वीज मनु ॥ ३ ॥ १ महि
षमदिनिया वीज मनु ॥
ॐ ॥ ॥ ॥ ॥

धी ३ दुर्ध्वं वीज मनु ॥ ॥

१ नमः प्रवि काये ॥ ॥ ॥
वायू नू वाच ॥ उमा न्द वीन
मत्क ल्य । (१) ल नू न यी शी
। नामा ह कं प व कामि न राणी
पाप नाग न ॥ पथ म । (१) ल फू
ति । द्वितीय श्रुति क ति । (१)
गीय श्रुति पृथ ॥ १ ॥ ति । कृष्ण
ति चतुर्थ कं ॥ य च ॥ मत्क न्द
मात ति । य ह का ला य नी ति
य स फ र्म काल राणी च । महा
लोत्री ति च । ह र्म । उका न्द रा
नि नामा नि । व फ । (१) म हा र्म
ना ॥ १ ॥ नू व ति या द व या द
वि । (१) व स ना स ना ॥ य ॥ द
क ल्य मत्क य । (१) नामा ह
कं वृत्त ॥ य ॥ द व द व या नू म
य न व फ र्म ह य या ॥ आव क

आधिमा वापि गृहीमा वापि
 नस्क ३४ वक्षो वापि विधिः
 पा।ने. मू. यमनायसं नयः॥
 जिसन्ध निरयमा सुखा. यः
 य० अष्टिका सुक ॥ नगस्या
 विष्णुजायकं. य० गामदि
 केक वि० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 युधूना. य. अष्टिका नामा
 सुक समार्य ॥ ॥ ॥

ततः प्रविष्टि घटस्थापनविधिः
 अभाप्रित्तिकाभिश्च पूर्वकृत्वा
 वेदिकां। यथात्रैवायमेतत्र गोधू
 मे श्चापिसंयुतां। तत्र संस्थापयेत्
 कुंभं विधिना संवर्षकं। सौवर्गा
 राजतं वापि ता प्रमुत्तमयसंभवः
 तिरुदयामेते॥ नवरात्रस्वनेत
 फियगु वेदिकादयके आवस

नयाया॥ ३॥ वेतनतिय। स्वान
 कुम्भ॥ चतस्वानत्राकिलं खत
 यावत्सूर्यार्घ्याया॥ वाक्यं
 अशदि गार्ग्य गोत्रास्यत् इ
 ह जन्मति दुर्गा प्रीतिद्वारा सर्वा
 यक्षांति पूर्वकदीर्घा युर्वपु
 लधनपुत्र यौ वावद्वि त्रसंतति
 वद्वि स्थिर लक्ष्मी कीर्तिला
 रात्रु पराजय सदभीष्ट सिद्धि
 र्थं शारद नवरात्रप्रतिपदि
 विहितकल शस्थापनदुर्गा
 पूजाकर्तुं श्री सूर्ययार्घ्यं न
 मः॥ पुष्पं नमः॥ पूषो नमः॥
 ॐ महाद्यौरिति कुशेन भूमि
 शोधनं॥ ॐ ओषधयस्तमि
 त्रियवानृतिक्षिप्य ॐ आ
 त्रिद्युक्कलशमिति वेदिका
 यां घटं संस्थाप्य ॐ इमं मे

गंगे इति जलेनायूर्य। गन्ध
द्वारा प्रीति गन्धं॥ ॐ या ओष
धीरिति सर्वोषधिः॥ ॐ कांटा
त्कांटादिति दूर्वा॥ ॐ अश्व
त्थेव इति पंचपल्लवान्॥ ॐ
स्यो नायुधितीति सप्तप्रति
का॥ ॐ याः फली नीतिफलं॥
ॐ सहिरन्ना नीति पंचरत्नं॥
ॐ युवा सुवासा इति वस्त्रेणा
वेद्यु॥ ॐ पूर्णा दूर्वाति पू
र्ण पात्रं॥ ॐ दुर्गे दुर्गे रक्ष
हि स्वाहा॥ इति पूज्य आवा
हनं ॐ आगच्छ वर दे देवि
देत्पद पद्म विनाशिति पूजां
गृह्णातु पुत्रिनमस्ते शंका

रप्रिये॥ ॐ सर्व तीर्थ सप्तवा
रि सर्वदेव सप्तनितां। इमं च
टं सप्तगच्छति व देव गतौः
सह॥ इति पूजयेत्॥ इति
घट स्थापन विधिः॥ तच्छे
ते ले नवरात्र स्वने विधि न
पूजा

